

दमभक्तलियासादिसंसिद्ध॥ वा वरुक्षा वा गत्रसमस्तोऽ  
(२५) ॥ १०० ॥ काकोय काकवलियिपुस्तक्य ॥ दमा  
तनत्वयादीयर्ता॥ कवस॥ ॥ भूनायभूनावलियि  
पुस्तक्य ॥ दमा तनत्वयादीयर्ता॥ त्ववमन॥ लयत  
सजातयवोक्ता॥ उयमस्ययमद्रुक्त्यवायसासिमहा  
मन॥ सयजनाकर्तयार्थवर्तिमृद्रुवायसा॥ ॥



[illegible]

जाम्बाभे मृगवायसा ४। वायसा ४। परिगृह्णन्तु ह्यसौ सत  
 ल्येनान्न ॥ नमिगृह्णन्तु नन्नमिगृह्णन्तु नन्नमिगृह्णन्तु नन्नमिगृह्णन्तु  
 खासनत्तु ॥ मध्यकृत्तु वनदधुवालि ॥ श्रीधर्मना  
 जायनभा ॥ सुमसी ॥ वर्मना जाय वृथ न ॥ वनवृथ न  
 वेदित्वा नन्नकं धनमदि मुं धन नन्नवृथ नभा सुम ॥ सुम  
 धादि ॥ लखसर्वे धनो व निसिय ॥ ॐ का का य का कोप



पुष्करजलार्घ्यं त्वया दीयतां ॥ ॐ श्रुं नमो नमः  
 पुष्करजलार्घ्यं त्वया दीयतां ॥ इह सत्पूजाय ॥ नमः ॥ श्री  
 लार्घ्यं त्वया दीयतां ॥ त्वत्सर्वस्य इह सर्वं ध्यायन्मिसि यः ॥ ॐ  
 यः कश्चित्पुण्यं कृत्यं नैव कुरु कश्चित् न स्मृतं न सत्त्वं नृपि मा  
 या नृमिलं मां मधुमिष्टिना ॥ ॥ त्वं कुरु ॥ ॐ काकाय  
 काकाय पुष्करजलार्घ्यं त्वया दीयतां ॥ ॐ श्रुं नमो नमः

नवलिपिपुस्तकास्यीतल्लयादीयता॥काखनक॥वि  
यानक॥षुर्थंतास्यंभासकृय॥कालसभालसयूया  
कायवनदक॥धवगीनकोतालसहिने॥अर्धथियाथ  
थ्य॥वनकककृयानिषयाथ्य॥लेखकायनकायाव  
नया॥उद्धर्नयाक॥श्रीकीलिभालकृयक॥संखाक  
ल॥सिधनक॥संखायथमनिधनक॥दकृधूनक॥अ



ववहामन कायक ॥ गंगासृष्टि का कायक ॥ दक्षधनक ॥ व  
 सुदहन लोयावविय ॥ लंखनयक ॥ कोमालसमिधुयक  
 वायुनयकावभवनकायक ॥ धकोमालसं लंखतयाव  
 पुनडनय ॥ सेंनधिदिक ॥ श्रीसय्योद्यमाक ॥ लंखन्यासल  
 आदाव वासधस्ववाकनदलक ॥ वासधया गुतिसस्व  
 घागनलंखतयक ॥ वासधयागलंखनय ॥ का ॥ देवि

उसको दिनांक १७९०..... ॥ १२॥



न कं॥ ता न वाधि॥ संरुआ न विप्रिया॥ ॥ इदं धा वयो न धा व  
 हाय का व रु वा सि लि हा या व हाय का य इ हा व या व सि क था स  
 लं ख मं उ या धा व पि हा या व या खा स इ द धा व या न धा व ना हा य  
 हा क पू य ॥ ॥ स्वा व सि य इ नि सि य ॥ न दू ने या व ॥ ॥ धृ ति  
 व न क वि धि नू द या ॥ ॥ अ थ न का द ग दि व स ॥ ॥  
 स्वा स हा न वि य रु व हा ॥ इ या व स रु गि या न नि वि य ॥ ॥ स्वा स

हि न गि व लं हा य ॥ रु हा न क धा वा य रु द मा स न ॥ इ य नि दृ र्ता प्र  
 र्था ॥ ॥ न वं ज व हा न इ य नि दृ र्ता ॥ यं वा मृ ग ॥ र्थ द न ॥ सिं दू न य  
 श्ल य वी क ॥ पू ष ॥ धू ष ॥ रु ल ॥ दी य ॥ ॥ रु द रु ल य ष धू य दी य  
 इ य नि दृ र्ता ॥ ॥ ॥ स्वा स हा न वि थ न ॥ ॥ ला सा ला या व रु म  
 व न रु व ध या व न ॥ यं रु व न ॥ रु ग न रु हा य कं ॥ ॥ थ हा न रु  
 व ॥ ॥ यं रु व न ॥ गि सि ल्हा य ॥ हा स न रु थ क वि वि य ॥ ॥ ख वि वि  
 ॥ न रु वे ला न ना डे रु य रु जि ती वं व हा र्वा दा रु न की



यावमाह्वयेकं ॥ लासासखहावसमानयावकं ॥ पूजायावकं  
 ॥ काश्वयणपुष्यपुनर्वसुकादशकलाश्रमहावाक्पुष्य  
 य ॥ दमानेडयतिष्ठतां ॥ हस्तार्ध ॥ चन्द्रन ॥ सिद्धन ॥ यज्ञाय  
 वीर्ययुष्य ॥ तन्महालंकारविय ॥ दक्षयदार्थविय ॥ भासिचक  
 ॥ नयकलायः सहिचक ॥ जजमानन ॥ लावाहिकनलसिचक ॥  
 लाशकाभवनरसिचक ॥ १ ॥ कुशकिलगलीगृहीत्वा ॥  
 पुनिय ॥ कृति ११ वजितय ॥ वजिदकतये ॥ पालीमिसीताय ॥

हयदीप ॥

अथवालाहकल्या ॥ उअथादि ॥ अथावर्कवपुकाद्यंथाह  
 रीगयनागानं ॥ कंचकचाहरीयेव ॥ उभूकमउवन्धनं ॥  
 पादहृषणवसुच ॥ उयानकं ॥ गंधन ॥ कुरुनेहकयाचंचया  
 नपाउकमपुलं ॥ नकादगीवकूनवं ॥ रंइलीयजनानिच ॥  
 खानयातश्चविविधं ॥ यकानेमस्युगंधन ॥ अमकल  
 कयिपुवृद्धगपिकृयथानाम ॥ संग्रहो क संयायिकाम



सार्थ महावाक्कथाय ॥ उक्तानि दत्तु निरुत्तमदं संप्रददा ॥  
 दक्षिण विद्य ॥ मखसद्विविद्य ॥ नको ॥ अथ गि वद्धवन्नविद्यु  
 ॥ ॥ यवाक्य ॥ श्रीचूचय ॥ वज्रिय ॥ धनकस्तिसाख्यन  
 धनिया ॥ दृश्या ॥ हामूमधि ॥ अमक (म) वपितु नृद ॥ प्रथमः  
 नृकादमकलाधमद्विधुसिनमूर्यनिरुता ॥ क ॥ हामूर्य ॥ अम  
 क ॥ वपितु नृद ॥ प्रथम नृकादमकलाधमद्विधुसिनमूर्यनिरुता

नैवेद्यं हल ॥ २

मूर्ति उपतिष्ठतां ॥ नृकादमकलाधमद्विधुसिनमूर्यनिरुता ॥  
 यथाधूयदीयां ॥ दंरुलयुध्यादि ॥ श्राव ॥ उवाच ॥  
 मुखनिलय ॥ पितृलाकनिवासिनी ॥ अथ यथावाचमानानां  
 मकीयमूर्यनिरुता ॥ कलायथमनृपादि ॥ श्रीहमकादम  
 दिने ॥ इति वासादि संहर्ष ॥ उमरुमिन्नमवय ॥ संप्रद  
 सर्वरावानां सर्वान् इति द्विक्वा ॥ ननं किन्नयि ॥ उवाच ॥